मेरा भाई मैथ्यू

मैरी थोम्पसन, हिंदी : विदूषक

मेरा भाई मैथ्यू

मैरी थोम्पसन, हिंदी : विदूषक

मेरे भाई मैथ्यू को बिल्लियाँ पसंद हैं. कभी-कभी हम शनिवार वाले दिन बिल्लियों को देखने के लिए अपने पड़ोस की सैर करते हैं. इस दौरे में हमें काफी देर लगती है क्यूंकि मैथ्यू हरेक बिल्ली के साथ बहुत समय बिताना चाहता है. पहले मुझे लगता था कि उसे सभी बिल्लियां एक-जैसी ही पसंद हैं. परन्तु अब मुझे पता है कि हमारी सड़क के उस पार सफ़ेद रंग की एक बिल्ली उसे सबसे ज्यादा पसंद है.

लोगों को यह समझने में कुछ समय लगा कि वो सफ़ेद बिल्ली, मैथ्यू की सबसे पसंदीदा बिल्ली थी. इसकी वज़ह है कि मेरा भाई, अन्य बच्चों जैसे बोल नहीं पाता है. पर मैथ्यू जो कुछ कहता है उसे मैं अच्छी तरह समझ लेता हूँ.

सफ़ेद बिल्ली को देखकर मैथ्यू हमेशा यह कहता है, "वो मेरी बिल्ली है."

असल में वो सफ़ेद बिल्ली मैथ्यू की नहीं है. वो हमारे पड़ोसी की है. जब मैथ्यू ने वो बात पहली बार कही तभी मैं समझ गया कि वो उसकी सबसे प्रिय बिल्ली थी.

अलग तरीके से बात करने के साथ-साथ, मेरे भाई का चाल-ढाल और बर्ताव भी दूसरे बच्चों से भिन्न है. कारण? मेरा भाई अपंग पैदा हुआ था.

मुझे वो समय याद है जब मैथ्यू का जन्म हुआ.

माँ और पिताजी हमेशा उसके पास अस्पताल में ही रहते थे. मुझे घर पर दादी के साथ अकेले रहना पड़ता था. तब मैं दिन भर अकेले, जिग-सॉ पहेलियों से खेलता था. जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में मुझे कोई कुछ नहीं बताता था.

अंत में एक दिन मैं अपने भाई को, अस्पताल की एक छोटी खिड़की में से देख पाया. उसके साथ में माँ थीं, जो अस्पताल का हरा गाउन पहनें थीं. वो एक मशीन पर झुकी हुईं थीं. मशीन एक टैंक और बहुत से तारों और टियूब्स से जुड़ी थी. वहां कई रंगीन बत्तियां भी जगमगा रही थीं.

उस उपकरण के नीचे मेरा छोटा भाई लेटा था. वो देखने में बिल्कुल भी एक छोटे बच्चे जैसा नहीं लग रहा था. अंत में मैंने देखा कि वो भी एक कच्छा (डायपर) पहने था, जिसे अस्पताल में पहनना ज़रूरी था. उसे देखकर ही मुझे विश्वास हुआ कि वो मेरा छोटा भाई हो सकता था.

"वो टियूब और बाकी चीज़ें किसके लिए हैं?" मैंने पिताजी से पूछा.

"वो तुम्हारे छोटे भाई के साँस लेने, खाना खाने और उसे गर्म रखने के लिए हैं," उन्होंने कहा. "अन्य बच्चों की तरह वो अभी यह काम नहीं कर सकता है."

"क्यूं नहीं?" मैंने पूछा. "आखिर क्या हुआ?"

"किसी को भी पक्का नहीं पता," पिताजी ने कहा.

मेरे जन्मदिन वाले दिन भी मेरा भाई अस्पताल में ही था. तब दादी, मदद करने के लिए हमारे घर पर आईं थीं. घर में इसकी वज़ह से काफी तनाव भी था.

दादी ने कहा, "जो कुछ भी होता है उसका कोई उद्देश्य होता है, और हम लोगों को एक "विशेष" बच्चे की देखभाल करने के लिए खासतौर पर चुना गया है."

"बकवास!" पिताजी ने कहा. "ऐसी चीज़ें इत्तिफाक से कभी-कभी हो जाती हैं."

मुझे बस इतना पता था कि तब किसी की भी, मेरे जन्मदिन में रूचि नहीं थी.

जैसे ही दादी ने जन्मदिन की मोमबत्तियां जलाना शुरू कीं, वैसे ही फोन बजा.

“तुम्हारी माँ का फोन था,” पिताजी ने कहा. “तुम्हारे भाई की तबियत और बिगड़ गई है.”

पिताजी फ़ौरन अस्पताल के लिए रवाना हुए.

जब वो देर रात को लौटे तो उन्होंने कहा कि डॉक्टर्स के अनुसार मेरा भाई अब खतरे से बाहर था.

पर तब तक मेरी बर्थडे पार्टी के लिए बहुत देर हो चुकी थी.

एक रात पिताजी ने बताया कि माँ ने, मेरे भाई के लिए एक नाम चुना है – मैथ्यू.

“बहुत अच्छा नाम है,” दादी ने कहा. “मैथ्यू का मतलब होता है “विशेष उपहार.”

यह सुनकर पिताजी ने एक लम्बी आह भरी. “वो विशेष उपहार है या नहीं,” उन्होंने कहा, “पर मैथ्यू को अभी कुछ और समय अस्पताल में रहना पड़ेगा.”

“क्यूं?” मैंने पूछा. “क्या उसकी तबियत सुधर नहीं रही है?”

“हम सुधार की उम्मीद कर रहे हैं,” पिताजी ने कहा.

“क्या वो जल्दी घर आएगा?” मैंने पूछा.

“पता नहीं,” पिताजी ने उत्तर दिया.

इंतज़ार करते-करते मैं थक गया. अब मुझे फिकर भी हो रही थी. पता नहीं मेरे भाई को क्या हो जाए? मेरे दिमाग में तमाम सवाल उठ रहे थे, जिनका उत्तर मुझे नहीं मिल रहा था. और जो उत्तर मुझे मिलते थे वो काफी फालतू थे. मैं बस माँ, पिताजी और मैथ्यू को घर में वापिस देखना चाहता था.

अंत में मैथ्यू खुद सांस ले सका, खा सका और खुद को गर्म रख सका. तब माँ और पिताजी, मैथ्यू को अस्पताल से घर लेकर आए. अंत में मैं अपने छोटे भाई को पहली बार गले लगा पाया.

माँ मेरे एक ओर बैठीं थीं, और दादी दूसरी तरफ़.
“ज़रा सावधानी बरतना,” माँ ने कहा.

“उसे गिराना नहीं,” दादी ने कहा.

न जाने वो मुझे क्या समझते थे? बिल्कुल गधा!

वैसे मैथ्यू उस समय सो रहा था, पर मुझे लगा उसे पता होगा कि वो किसकी गोद में है. उसे किसने उठाया था, मैथ्यू उससे बेखबर था.

माँ और पिताजी के घर वापिस आने के बाद मुझे अपार शांति मिली. क्यूंकि अब हम सब लोग, एकसाथ रह सकते थे. अब हमारा परिवार एक सामान्य परिवार था. पर माँ ने कहा कि अभी भी मेरे छोटे भाई को बहुत देखभाल की ज़रुरत पड़ेगी.

माँ ने कहा भाई की ठीक से देखभाल करने के लिए हमें बहुत सी नई चीज़ें सीखनी पड़ेंगी, तभी मैथ्यू का विकास अच्छी तरह से होगा.

फिर एक विशेष थेरापिस्ट (चिकित्सक) ने हमारे घर आना शुरू किया. उन्होंने माँ को, मैथ्यू की ठीक परवरिश के बारे में समझाया. उन्होंने मैथ्यू के लिए कुछ ख़ास तरह का व्यायाम भी बताए. वो मैथ्यू के लिए विशेष खिलोनें, पहेलियाँ और कुछ ख़ास उपकरण भी लेकर आतीं.

जब चिकित्सक आतीं तो मुझे चुपचाप बैठकर अपने खिलोनों से खेलना होता. तब चिकत्सक माँ से बातचीत करतीं और मैथ्यू को व्यायाम करवातीं. मैंने अपने लिए एक “स्पेस-स्टेशन” बनाने की कोशिश की, पर इतने लुभावने खिलोनों के सामने, मैं उसे पूरा नहीं कर पाया. मैं उन विशेष खिलोनों से खेलना चाहता था, पर वे सिर्फ मैथ्यू के लिए थे.

रोजाना, सुबह से शाम तक माँ, मेरे भाई के साथ व्यस्त रहतीं. वो उसके साथ खिलोनों से विशेष खेल खेलतीं. वो मैथ्यू को ख़ास तरीके का व्यायाम करवातीं. माँ व्यायाम के समय कुछ संगीत के कैसेट भी बजातीं. धीरे-धीरे वो संगीत के कैसेट पूरे दिन बजते रहते. तब मैं अपने "स्पेस-स्टेशन" को अपने सोने वाले कमरे में ले जाता और अपना दरवाज़ा बंद कर लेता. दिनभर वही-वही संगीत सुनने से कमरे में अकेले बैठना ही मुझे अच्छा लगता.

जब माँ, मैथ्यू को व्यायाम नहीं करा रही होतीं, तब वो उसके साथ आगे क्या-क्या करना है, उसके बारे में पढ़तीं. माँ को लगा कि मैथ्यू के लिए तैरना अच्छा होगा. फिर हम लोग स्विमिंग पूल गए.

"मुझे गोता लगाते हुए देखो," मैं चिल्लाया.

"ज्यादा छपाके मत मरो!" माँ ने मेरे गोता लगाने से पहले चिल्लाया. पर जब मैं गोता लगाकर ऊपर आया तो मैथ्यू मुस्कुरा रहा था और सभी तरफ़ छपाके मार रहा था. उसे मेरी गोताखोरी पसंद आई थी.

एक दिन मैंने मैथ्यू को अपने स्पेस-स्टेशन के बारे में बताने की ठानी.

“इधर देखो!” मैंने कहा. फिर मैंने चन्द्रमा की ओर अपना राकेट लांच किया.

मैथ्यू की आँखों की चमक देखकर मुझे लगा कि उसे मेरा स्पेस-स्टेशन पसंद आया. फिर मैंने उसे रोबोट के हाथ और अपना टेलिस्कोप भी दिखाया. फिर मैथ्यू बहुत जोर से हंसा – वो शायद उसकी पहली हंसी थी.

माँ यह देखकर बहुत खुश और उत्तेजित हुईं, पर उन्हें इससे कुछ आश्चर्य नहीं हुआ. जब मैंने मैथ्यू को पहली बार उठाया था तभी मुझे पता चल गया था कि वो काफी कुछ मेरे जैसा ही था. मुझे लगा था कि उसे भी अन्तरिक्ष की यात्रा करने का, मेरे जैसा ही शौक होगा.

“क्यूंकि मैथ्यू तुम्हें इतना पसंद करता है, इसलिए तुम उसकी “चिकित्सा” में मदद करो,” माँ ने मुझसे कहा. मैथ्यू के व्यायाम को माँ, इसी लम्बे-चौड़े नाम से बुलातीं थीं.

चिकित्सा-कार्यक्रम! इन शब्दों को सुनकर मैं उतना ही थकता, जितना मैं अपना कमरा साफ़ करते समय थकता! फिर मैंने अपना निर्णय लिया - मैं मैथ्यू के साथ बस खेलूंगा!

जब मैथ्यू छोटा था, तब वो मेरे साथ कोई भी खेल खेलता था. वो मेरे दोस्तों जैसा नहीं था. मेरे दोस्त अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें कौन सा खेल पसंद है, और किस से उन्हें नफरत है.

“क्या तुम मेरे साथ अन्तरिक्ष-खोजी का खेल खेलोगे?” मैंने पूछा.

मैथ्यू राज़ी हो गया.

फिर मैंने गत्ते के एक बड़े डिब्बे वाले अन्तरिक्ष-यान में, मैथ्यू को बिठाकर पूरे घर में घसीटा.

“डेविड, थोड़ा धीमे खींचों! यह मैथ्यू के लिए बहुत तेज़ है,” माँ ने कहा. पर मैथ्यू लगातार हँसता रहा और मुझसे और तेज खींचने के लिए कहता रहा.

अब क्यूंकि वो बड़ा हो गया है इसलिए मेरे भाई के खुद अपने विचार हैं. अब वो अन्तरिक्ष-खोजी की बजाए खुद के अपने खेल खेलना चाहता है जैसे – अन्तरिक्ष में बिल्लियाँ.

कभी-कभी मैं अपने भाई को किताबें भी पढ़ कर सुनाता हूँ. पिछली बार जब दादी हमारे साथ रहने आईं थीं तब उन्होंने ही यह सुझाव दिया था.

"डेविड, तुम मैथ्यू को किताबें पढ़कर क्यूं नहीं सुनाते? वो एक बहुत अच्छा और नेक काम होगा," दादी ने कहा.

फिर मैंने उसे अपनी मनपसंद किताब – *"अन्तरिक्ष के आक्रमणकारी"* पढ़कर सुनना शुरू की. जब कभी मैं उसे *"काबूम"* पढ़कर सुनाता तो वो तुरंत मुझसे आकर चिपक जाता.

"अरे बाप रे!" दादी ने कहा. "ऐसी कहानियां सुनकर तुम बिचारे मैथ्यू को बिल्कुल डरा दोगे. फिर वो इतना उत्तेजित होगा कि उसे नींद ही नहीं आयेगी."

किताब ख़त्म करने के बाद मैंने मैथ्यू से पूछा, "तुम्हें कहानी कैसी लगी?" पर तब तक मैथ्यू मेरी गोद में ही सो गया था.

माँ पहली व्यक्ति थीं जिन्होंने गौर किया कि मैं अपने भाई की बोली को कितनी अच्छी तरह समझता था. जब मैथ्यू की बोली परिवार में किसी को भी समझ में नहीं आती, तो वे मेरी मदद मांगते.

“ऑरेंज जूस,” मैथ्यू ने इस शब्द को छह बार दोहराया.

“उसने क्या कहा, डेविड?” पिताजी ने मुझसे पूछा.

“उसने कहा ऑरेंज जूस. मैथ्यू को कुछ ऑरेंज जूस पीने को चाहिए,” मैंने उत्तर दिया.

“ब्लॉक्स!” मैथ्यू ने कहा.

“उसने क्या कहा, डेविड?” दादी ने मुझसे पूछा.

“मैथ्यू को एक ब्लाक चाहिए,”

मुझे समझ में नहीं आता कि बाकी सबको मैथ्यू की बोली क्यूं नहीं समझ में आती है.

पिताजी के अनुसार मेरा रोल अब एक इंटरप्रेटर (दुभाषिए) का हो गया है.

मुझे लगता है कि मैंने अपने भाई को अन्तरिक्ष-रेडियो स्टेशन पर घंटों सुना है. इसलिए मैं उसकी बातों को बेहतर समझता हूँ.

भाई के साथ खेलना मेरे लिए, अक्सर बहुत आसान नहीं होता है. और कई बार उसके साथ रहना भी मुझे जायज़ नहीं लगता है.

मिसाल के लिए, हम दोनों एक बार ब्लॉक्स से खेल रहे थे.

“मेरे मून-लैंडर को देखें,” मैंने माँ और पिताजी को बुलाया.

पर किसी का मेरे मून-लैंडर पर ध्यान नहीं गया. उधर मैथ्यू ने कुछ ब्लॉक्स को एक-के-ऊपर-एक रखकर एक मीनार बनाई थी.

बाद में मेरे भाई ने अपनी मीनार से मेरे मून-लैंडर को टक्कर मारी. तब सबने तालियाँ बजायीं. क्या किसी ने गौर किया - कि मैथ्यू ने मेरा मून-लैंडर तोड़ डाला था?

मेरा भाई हर समय मेरी नक़ल करता है. अगर मैं किताब पढ़ता हूँ तो वो भी हाथ में किताब उठा लेता है. अगर मैं ब्लॉक्स से खेलता हूँ, तो वो भी ब्लॉक्स से खेलना चाहता है. अगर मैं कोई चित्र बनाता हूँ तो वो भी तुरंत चित्र बनाना शुरू कर देता है.

एक बार मैं अकेले अपने डायनासोर से खेलना चाहता था. “माँ, मैथ्यू से कहो कि वो मेरी नक़ल नहीं करे!” मैं चिल्लाया.

“वो तुम्हारी नक़ल इसलिए करता है क्यूंकि वो तुम्हें दुनिया का सबसे महान इंसान समझता है,” माँ ने मुझे समझाते हुए कहा. “तुम्हें तो इस चापलूसी से खुश होना चाहिए.” मुझे फिर भी मैथ्यू का यह रवैय्या, गलत लगा.

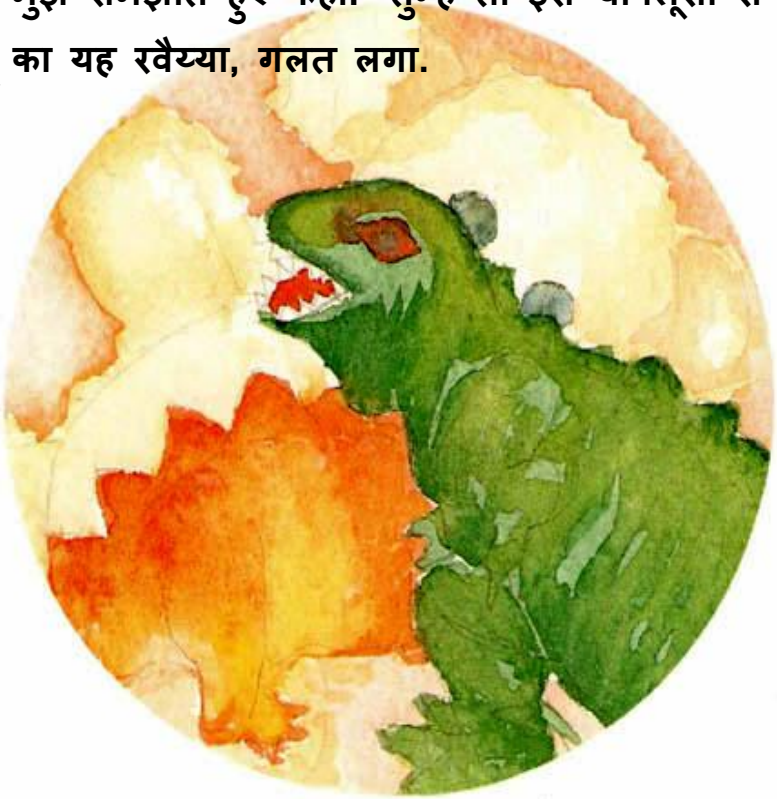

जब कभी मैं अपने दोस्तों के साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, तब मैथ्यू ज़रूर हमारे पीछे लगता है.

“पिताजी, मैथ्यू हमें परेशान कर रहा है,” मैंने एक बार शिकायत की.

“अगर तुमने मैथ्यू को भी खेल में शामिल करोगे, तो बहुत अच्छा होगा,” पिताजी ने कहा.

“मैं बिल्ली हूँ!” मैथ्यू ने कहा.

“मैथ्यू एक बिल्ली बनना चाहता है,” मैंने अपने दोस्तों को समझाया. फिर मैथ्यू बिल्लियों जैसे मियाऊँ-मियाऊँ करने लगा. मुझे बहुत अच्छा लगा. मेरे दोस्तों ने भी इस पर कोई एतराज़ नहीं किया.

कभी-कभी मेरा भाई मुझे बड़ी उलझन में डाल देता है. एक बार माँ और पिताजी के साथ मैथ्यू मेरे क्लास द्वारा प्रस्तुत, एक नाटक देखने स्कूल आया. फिर हर बार जब मैं स्टेज पर आता तो मैथ्यू बहुत शोर मचाता. लाइब्रेरी में किताबें चुनते समय मैथ्यू कभी भी चुप नहीं रहता है. और जब कभी हम बाहर किसी रेस्टोरेंट में जाते हैं तब मैथ्यू अपना दूध ज़रूर गिराता है.

मेरे सबसे अच्छे दोस्त के अनुसार उसके परिवार में भी बिलकुल वही आलम है, जबकि उसका भाई बिल्कुल अपंग नहीं है.

शायद मैथ्यू के साथ रहना काफी कुछ किसी अन्य भाई के साथ, रहने जैसा ही है. पर कभी-कभी उसके साथ रहना बहुत मुश्किल भी हो जाता है.

मेरे भाई को नई चीज़ें सीखने के लिए अन्य बच्चों से कहीं ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है. इसमें उसे माँ, पिताजी और अन्य लोगों की सहायता की ज़रुरत पड़ती है. वो जब कोई नया काम, या नई कुशलता सीखता है, तब हम सब मिलकर उसका उत्साह बढ़ाने के लिए तालियाँ बजाते हैं. तब मेरा भाई इतना खुश होता है कि वो खुद भी तालियाँ बजाने लगता है!

पर कभी-कभी मैथ्यू को कुछ समझ में नहीं आता है. शायद वो उस काम को कर ही नहीं सकता है. तब वो उदास हो जाता है. तब मुझे भी दुःख होता है. जब मैं छोटा था तब मैं अपने हर जन्मदिन पर, बस एक ही मन्नत मांगता था – कि मेरा भाई भी अन्य बच्चों जैसे ही, सामान्य हो जाए. पर अब मुझे पता है कि सिर्फ मन्नत मांगने से स्थिति नहीं बदलती है.

ऐसे भी कई मौके आते जब हमें पता नहीं होता, कि क्या वो अमुक चीज़ सीख पाएगा, या नहीं. फिर एक दिन वो उस चीज़ को करना सीख जाता है. उदाहरण के लिए किसी को नहीं पता था कि मैथ्यू कभी चलेगा. पर माँ ने उसको नियमित रूप से विशेष व्यायाम कराया. फिर एक दिन, जब सब लोग उम्मीद छोड़ बैठे थे, तब मैथ्यू चलने लगा.

कुछ दिन पहले मैंने माँ से पूछा, “मैथ्यू साइकिल चलाना कब सीखेगा? फिर हम बिल्ली देखने वाली अपनी सैर, दुगनी स्पीड में ख़त्म कर पाएंगे.”

“हमें पक्का पता नहीं कि मैथ्यू कभी साइकिल चलाना सीख पाएगा,” माँ ने उत्तर दिया.

“और अगर वो साइकिल चला भी पाया,” पिताजी ने आगे जोड़ते हुए कहा, “तो भी हमें पता नहीं कि वो साधारण साइकिल चला पाएगा या फिर कोई “विशेष” प्रकार की साइकिल.”

मुझे लगता है कि मैथ्यू साइकिल चलाना ज़रूर सीखेगा. साइकिल सीखने के बाद भी हमारी बिल्ली यात्रा कुछ जल्दी ख़त्म होगी, इस पर मुझे अब शक है. क्यूंकि उस सफ़ेद बिल्ली ने, अभी-अभी छह बच्चे जन्में हैं.

मेरा भाई मैथ्यू

जब किसी परिवार में कोई अपंग बालक पैदा होता है तो वो बच्चा परिवार में परवरिश का "केन्द्र-बिंदु" बन जाता है. इससे परिवार में बाकी बच्चों के लिए मुश्किलें पैदा होती हैं. *मेरा भाई मैथ्यू* किताब बहुत संवेदनशील तरीके से इस असलियत को बयां करती है. इसमें डेविड – एक अपंग बच्चे का बड़ा भाई, अपनी कहानी बताता है – और एक "विशेष" भाई के साथ-साथ बड़े होने के, अपने खट्टे-मीठे अनुभव सुनाता है.